बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना

वर्ष 2017 का मॉडल प्रश्न पत्र एवं उत्तरमाला

हिन्दी (100 अंक) **Hindi (100 Marks)**

Set-1

सेट-1

हिन्दी -XII

समय- 3 घंटे 15 मिनट पूर्णांक-100

परीक्षार्थी के लिये निर्देश :

१. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

२. दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।

३. परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

1. संक्षिप्त पत्र लिखे । 6

अपने छोटे भाई को उसके जन्मदिन के उपलक्ष्य में बधाई पत्र लिखिए।

अथवा

मासिक शुल्क माफ करने के लिए प्रधानाध्यापक के पास आवेदन पत्र लिखिए ।

2. संक्षेपण करें : 4

चरित्र निर्माण जीवन की सफलता की कुंजी है। जो मनुष्य अपने चरित्र की ओर ध्यान देता है वही जीवन क्षेत्र में विजयी होता है। चरित्र-निर्माण से मनुष्य के भीतर ऐसी शक्ति का विकास होता है, जो उसे जीवन संघर्ष में विजय बनाती है। ऐसी शक्ति से वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। वह जहाँ कहीं भी जाता है, अपने चरित्र की शक्ति से अपना प्रभाव स्थापित कर लेता है। उसे देखते ही लोग उसके व्यक्तित्व के सम्मुख नतमस्तक हो जाते है। उसके व्यक्तित्व में सूर्य का तेज, आँधी की गति और गंगा के प्रवाह की अबाधता होती है।

3. I) सही जोड़ें का मिलान कीजिए- 5x1=5

(क) गाइ-डि मोपासाँ	(प) उसने कहा था
(ख) पृथ्वी	(पप) जयशंकर प्रसाद
(ग) बोधा सिंह	(पपप) तुलसीदास
(घ) कवितावली	(पअ) रस्सी का टुकड़ा
(घ) कामायनी	(अ) नरेश सक्सेना

II) निम्नलिखित प्रश्नों के बहुवैकल्पिक उत्तरो में से सही उत्तर चुनिए- 5x1=5

(i) 'तिरिछ' कहानी के कहानीकार है ।

(क) उदय प्रकाश (ख) तुलसीदास

(ग) रामानंद (घ) बालकृष्ण भट्ट

(ii) 'भक्तमाल' किसकी रचना है ?

(क) नाभादास (ख) तुलसीदास

(ग) कबीरदास (घ) सूरदास

(iii) मालती पात्र है-

(क) 'जूठन' का (ख) रोज का

(ग) सिपाही की माँ का (घ) तिरिछ का

(iv) गालिब

(क) भूषण (ख) त्रिलोचन

(ग) नागार्जुन (घ) अरूण कमल

(v) गाँव का घर

(क) मलयज (ख) नरेश सक्सेना

(ग) त्रिलोचन (घ) ज्ञानेन्द्रपति

III) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए: 5x1=5

(क) सत्य का साकार रूप तो .... ही होता है। (राजा/प्रजा)

(ख) पक्षपात नहीं .... सबहिं के हित की भाषी । (वचन / शब्द)

(ग) .... कवि यह जोरि सुनावा । सुना सो पीर प्रेम कर पावा । (मुहमद/तुलसी)

(घ) मैं दलविहीन .... की स्थापना करना चाहता हूँ। (लोकतंत्र/ राजतंत्र)

(घ) बाज की दाढ़ में ....का खून लग चुका है । (आदमी/कबूतर)

4. किसी एक विषय पर निबंध लिखे । 1X10=10

(क) आपका प्रिय त्योहार ।

(ख) आपके प्रिय कवि ।

(ग) इंटरनेट से लाभ एवं हानि ।

(घ) खेलकूद और छात्र-जीवन ।

5. सप्रसंग व्याख्या करें : 2X4=8

(क) ''आशामयी लाल-लाल किरणों से अंधकार,
चीरता-सा मित्र का स्वर्ग एक,
जन-जन का मित्र एक ।''

अथवा

''जिन पर है वे सेना के साथ ही जीतकर लौट रहे हैं ।''

(ख) जिस पुरुष में नारीत्व नहीं, अपूर्ण है।

अथवा

''निमोनिया से मरनेवाले को मुरब्बे नहीं मिला करते ।''

6. (क) किन्हीं पाँच शब्दों के संधि-विच्छेद कीजिए : 5x1=5

नीरव, सतीश, विद्यालय, पवित्र, आशीर्वाद, तपोवन

(ख) किन्हीं पाँच का विशेषण बनाइए । 5x1=5

पुरुष, क्षेत्र, हिंसा, ईश्वर, स्वाद, समाज

(ग) किन्हीं पाँच शब्दों के विपरीतार्थक शब्द बनाइए । 5x1=5

सुखद, प्रातः, अंतरंग, संयोग, विधवा, कीर्ति

(घ) किन्हीं पाँच मुहावरे का अर्थ स्पष्ट कीजिए । 5x1=5

पट्टी पढ़ाना, खाक छानना, अगर-मगर करना, पेट में चूहे कूदना, मुट्ठी गरम करना, नाक कटना ।

(घ) उपसर्ग और प्रत्यय का भेद स्पष्ट कीजिए । 5x1=5

7. निम्नलिखित लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दे : 6X2=12

(क) जमादार लहना सिंह ने 'जर्मन लपटन' को क्या करते हुए देखा ?

(ख) संपूर्ण क्रांति का लक्ष्य क्या है ?

(ग) 'कड़बक' के कवि की सोच क्या है ?

(घ) नारी की पराधीनता कब से आरम्भ हुई ?

(घ) 'ओ सदानीरा' किस नदी के लिए कहा गया है ?

(च) शिवाजी की तुलना भूषण ने किन-किन से की है?

8. दो दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर दीजिए - 2x5=10

(क) मालती के घर का वातावरण आपको कैसा लगा ? अपने शब्दों में लिखिये ।

अथवा

'संपूर्ण क्रांति' शीर्षक पाठ में वर्णित विचारों को स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'प्यारे नन्हें बेटे को' कविता का सारांश लिखिए ।

अथवा

'जन-जन का चेहरा' शीर्षक कविता का भावार्थ लिखिए ।

9. भक्तिकाल की सामान्य प्रवृतियों पर प्रकाश डालिए । 10

अथवा

आधुनिककाल की साहित्यिक प्रवृतियों के बारे में बताइए ।

उत्तर-खण्ड

1. प्रिय भाई रौशन,

शुभाशीर्वाद ।

तुम्हारा पत्र मिला। तुमने लिखा कि 15 नवम्बर को मैं राजगीर आऊँ। मुझे याद है कि 15 नवम्बर को तुम्हारा जन्मदिन है और इसीलिए तुमने मुझे घर आने के लिए लिखा है। मैं तुम्हारे जन्मदिन पर तुम्हें हार्दिक बधाई देता हूँ। मैं परमेश्वर से यही कामना करता हूँ कि तुम्हारा भावी जीवन मंगलमय एवं सुखद हो। तुम्हारी जीवन-वाटिका में सदैव सुगंधित और मनोहर फूल खिलते रहें। ईश्वर तुम्हारी सारी इच्छाएँ पूरी करें। इस अवसर के उपलक्ष्य में मैं तुम्हारे लिए हिंदी की महत्वपूर्ण काव्य-पुस्तकें उपहारस्वरूप रजिस्टर्ड डाक से भेज रहा हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम इन पुस्तकों में निहित ज्ञान-राशि को जीवन में व्यावहारिक रूप में उतारकर अपने जीवन की आदर्श दिशा निर्धारित कर सकोगे। तुम मेरे द्वारा भेजी गई इन पुस्तकों को मेरे आशीर्वाद के रूप में ग्रहण करोगे।

तुम्हारा अग्रज,

चंदन कुमार

अथवा, का उत्तर

सेवा में

श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदय

पी.सी.पी. इंटर कॉलेज, सोहसराय, नालंदा

द्वारा, वर्ग शिक्षक,

महाशय,

श्रीमान् से निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय का निर्धन छात्र हूँ। मैं इंटर में पढ़ता हूँ। मेरे पिताजी मजदूरो करते है। अल्प मजदूरी भत्ता मिलने के कारण उन्हें परिवार चलाने में बड़ी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। हम तीन भाई-बहन हैं। तीनों विभिन्न विद्यालयों में पढ़त हैं। हम तीनों को पढ़ाने में पिताजी को बड़ी कठिनाई हो रही है। मैं पढ़-लिखकर देश का सुयोग्य नागरिक बनना चाहता हूँ। आपकी कृपा के बिना ऐसा संभव होता नहीं दीखता ।

अत: श्रीमान् से करबद्ध प्रार्थना है कि मेरा मासिक शुल्क माफ कर मुझे शिक्षित होने का सअवसर प्रदान करें। इसके लिए मैं आपका सर्वदा आभारी रहूँगा ।

आपका आज्ञाकारी छात्र,

नीतीश कुमार

दिनांक 15 दिसम्बर 2016

वर्ग- XII

क्रमांक-40

2. शीर्षक- चरित्र का महत्व

चरित्र निर्माण से मनुष्य में संघर्ष-शक्ति आती है। चरित्र के माध्यम से ही व्यक्ति जीवन में सफल और विजयी होता है। चरित्रवान अपनी अबाध प्रगति से सबको प्रभावित करता है। तथा सभी नतमस्तक होते हैं।

(कुल शब्द संख्या-101, संक्षेपण की शब्द संख्या 34)

3. I)

(क) गाइ-डि मोपासाँ - रस्सी का टुकड़ा

(ख) पृथ्वी - नरेश सक्सेना

(ग) बोधासिंह - उसने कहा था

(घ) कवितावाली - तुलसीदास

(घ) कामायनी - जयशंकर प्रसाद

II)

(i) (क) उदय प्रकाश

(ii) (क) नाभादास

(iii) (ख) रोज

(iv) (ग) त्रिलोचन

(v) (घ) ज्ञानेन्द्रपति

III)

(क) राजा

(ख) वचन

(ग) मुहमद

(घ) लोकतंत्र

(घ) आदमी

4. (घ) खेलकूद और छात्र जीवन-

(i) भूमिका (ii) खेल का महत्व (iii) लाभ (iv) उपसंहार

(i) मानव जीवन में खेल-कूद का महत्व है। भूतकाल में हमारे देश में खेल-कूद को महत्व नहीं दिया जाता था। लेकिन, अब हम महसूस करने लगे है कि खेल-कूद बहुत उपयोगी है। इसलिए हमारे देश की प्रत्येक शैक्षणिक संस्था खेल-कूद की व्यवस्था करती है। वस्तुतः खेल-कूद शिक्षा का एक आवश्यक अंग है।

(ii) खेल-कूद का बहुत महत्व है। अच्छे स्वास्थ्य के लिए हमें खेल-कूद में भाग लेना चाहिए। हमारे जीवन में स्वास्थ्य सबसे महत्वपूर्ण चीज है। शरीर और मस्तिष्क के विकास के लिए खेल-कूद आवश्यक है। यदि हमारा स्वास्थ्य खराब है तो हम कोई काम नहीं कर सकते। स्वास्थ्य और शारीरिक बल के विकास के लिए खेल-कद् आवश्यक है।

(iii) खेल-कूद से बहुत लाभ है। वे स्वास्थ्य और शारीरिक बल का विकास करते है। शरीर और मस्तिष्क के विकास के लिए वे आवश्यक है। जब हम खेल-कूद में भाग लेते है तब हमारे शरीर का अच्छा व्यायाम होता है। खेल-कूद खुली हवा में होता है। जब हम खेल-कूद में भाग लेते है तब हम स्वच्छ हवा साँस लेते है। इसलिए खेल-कूद हमारे स्वास्थ्य और शारीरिक बल का विकास करते है।

खेल-कूद से हम अनेक गुणों को सीखते है। जब हम खेल-कूद में भाग लेते हैं तो हमें कुछ नियमों का पालन करना पड़ता है। इसलिए खेल-कूद से हम अनुशासन भी सीखते है जो व्यावहारिक जीवन में बहुत उपयोगी है।

खेल-कूद से हम आत्म-नियंत्रण करना सीखते हैं। अच्छा खिलाड़ी विजय होने पर अत्यधिक आनंद नहीं मनाता । जब वह पराजित हो जाता है तब वह निराश नहीं होता। जब वह खेल-कूद में भाग लेता है तब वह परिणाम की चिंता नहीं करता।

खेल-कूद मनुष्य को व्यावहारिक जीवन के लिए प्रशिक्षित करता है। खेल के मैदान में जिन गुणों का विकास होता है । वे बाद में जीवन में बहुत उपयोगी होते है। हमारा जीवन एक मनोरंजक खेल है। खेल-कूद में कुछ ऐसे गुणों का विकास होता है जो व्यावहारिक जीवन में उपयोगी सिद्ध होते हैं।

(iv) यद्यपि खेल-कूद बहुत उपयोगी है फिर भी उनमें कुछ बुराइयाँ भी हैं। यदि हम उनमें बहुत भाग लेते हैं तो हमारा स्वास्थ्य खराब हो जाता है। खेल-कूद में विद्यार्थियों का बहुत सारा समय चला जाता है। खिलाड़ी प्राय: अपने अध्ययन की उपेक्षा करता है। कभी-कभी खेल-कूद को लोग जीवन का मुख्य काम बना लेते हैं। जब विद्यार्थी खेल-कूद को अपने जीवन का मुख्य उद्दश्य बना लेते है तब वे अपने जीवन को बर्बाद कर लेते है। उनको खेल-कूद और अध्ययन में संतुलन बनाए रखना चाहिए ।

5. (क) प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित 'जन-जन का चेहरा एक' शीर्षक कविता से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध मार्क्सवादी कवि गजानन माधव मुक्तिबोध है। कवि ने लाल-लाल किरणों का प्रयोग समाजवाद के अर्थ में किया है। आज की दुनिया में आर्थिक विषमता और शोषण का अंधकार छाया हुआ है। कवि आशान्वित है कि समाजवाद के प्रसार से ही वह अंधकार दूर कर सकेगा। समाजवाद रूपी तीव्र अलोक ही विश्व में फैले आर्थिक वैषम्य और शोषण तथा अन्याय के अंधकार को काटने में समर्थ है। कवि आशा करता है कि इस अंधकार के समाप्त होते ही सर्वत्र स्वर्गिक शांति विराजमान हो जाएगी। वर्ग-संघर्ष समाप्त हो जाएगा और सर्वहारा वर्ग का राज्य स्थापित हो जाएगा। कवि कहता है कि मार्क्सवाद ही शोषितों का मित्र है। समाजवाद ही विश्वव्यापी अन्याय और शोषण के अंधकार को मिटाकर नये समाज

की रचना कर सकता है जिसमें सब समान होंगे, सबको समान अधिकार होंगे और सब सुखमय जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

अथवा

प्रस्तुत सारगर्भित वाक्य हमारी पाठ्यपुस्तक में संगृहीत 'हार-जीत' शीर्षक गद्य कविता से लिया गया है। इसके रचनाकार हिंदी के प्रसिद्ध गद्यकार एवं कवि अशोक वाजपेयी है।

प्रस्तुत वाक्य में कवि ने राजनीतिक झूठ को अनावृत किया है। शासक एवं सत्ताधारी वर्ग अपनी हार की घोषणा नहीं करता। यह अपनी हार को भी विजय के रूप में प्रस्तुत करता है और अपनी प्रजा को भ्रम में रखता है। प्रजा तो समझती है कि शासक की जीत हुई है। पर वास्तविकता दूसरी होती है। शासक अपनी हार को जश्न के माध्यम से प्रजा तक जीत के रूप में प्रस्तुत करता है और उसे यह स्वीकार करने पर मजबूर करता है कि वह बलवान तथा समर्थ है। उसकी कभी पराजय नहीं हो सकती ।

प्रस्तुत वाक्य काव्यात्मक व्यंग्य का उत्कृष्ट निदर्शन है।

5. (ख)

प्रस्तुत वाक्य राष्ट्रकवि दिनकर रचित 'अर्द्धनारीश्वर' शीर्षक निबंध से उद्धत है। इस पंक्ति में लेखक ने नारीत्व के महत्व पर प्रकाश डाला है।

दिनकर जी का कहना है कि जिस पुरुष में नारीत्व नहीं, वह अपूर्ण है। अतः प्रत्येक नर को एक हद तक नारी बनना आवश्यक है। गाँधीजी ने अपने जीवन के अंतिम दिनों में नारीत्व की भी साधना की थी। उनकी पोती ने उनपर जो पुस्तक लिखी है, उसका नाम ही 'बापू, मेरी मां ' है। दया, माया, सहिष्णुता और भीरूता ये स्त्रियोचित गुण कहे जाते हैं।

अथवा

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक दिगंत भाग-2 के 'उसने कहा था' पाठ से ली गयी है।

उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से वजीरा सिंह के इस कथन से लहना सिंह के त्याग, प्रेमपूर्ण समर्पण का परिचय मिलता है। खुद लहना सिंह, बोधा सिंह के पहरों की जगकर रात भर पहरा करता है, वह खुद सूखी लकड़ी पर सो जाता है। इसके त्याग को देखकर लहना सिंह को वजीरा सिंह सलाह देता है कि कहीं तुम्हारी भी तबियत खराब न हो जाए। जाड़ा क्या अर्थात् कहने का आशय यह है कि तबियत खराब हो जाएगी तो तुम क्या उसकी रक्षा कर पाओगे। तुम्हें मरने के लिए अपनी जमीन भी नसीब नहीं होगी। यहाँ 'मुरब्बा' अरबी शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ है- ''वर्गाकार चौकोर जमीन। यहाँ दूसरा अर्थ यह है कि जिस व्यक्ति को निमोनिया हो जाता है उसे कड़वी औषधि दी जाती है, मुरब्बे नहीं ।''

6 (क) किन्हीं पाँच शब्दों का संधि-विच्छेद करे ।

नीरव-	निः + रव
पवित्र-	पो + इत्र
सतीश-	सती + ईश
आशीर्वाद -	आशीः + वाद
विद्यालय-	विद्या+आलय
तपोवन -	तपः + वन

(ख)

पुरुष	-	पौरुषेय
ईश्वर	-	ईश्वरीय
क्षेत्र	-	क्षेत्रीय
स्वाद	-	स्वादिष्ट
हिंसा	-	हिंसक
समाज	-	सामाजिक

(ग)

सुखद	-	दुःखद
संयोग	-	वियोग
प्रातः	-	सायं

विधवा - सधवा

अंतरंग - बहिरंग

कीर्ति - अपकीर्ति

(घ) पट्टी पढ़ाना - बुरी राय देना

खाक छानना - इधर-उधर भटकना

अगर-मगर करना - तरह-तरह के बहाने करना

पेट में चूहे कूदना - बहुत जोर से भूख लगना

मुट्ठी गरम करना - घूस देना

नाक कटना - इज्जत जाना

(ङ) उस शब्दांश या अव्यय को उपसर्ग कहते हैं जो किसी शब्द के पहले आकर उसका विशेष अर्थ प्रकट करते हैं। जैसे- आ, उप ।

आ+गमन = आगमन, उप+कार = उपकार ।

प्रत्यय वह शब्दांश है जो किसी त(ि्त या कृत् शब्द के अंत में जुड़कर नवीन संज्ञा या विशेषण का निर्माण करते हैं। जैसे- समझ + औता = समझौता।

मूर्ख + ता = मूर्खता ।

7. (क) जमादार लहना सिंह दीवार से चिपककर नकली लपटन साहब की करतूत देखने लगा। लपटन साहब ने जेब से बेल के बराबर तीन गोले निकाले । तीनों को खंदक की दीवारों में जगह-जगह घुसेड़ दिया और तीनों में एक तार-सा बाँध दिया। तार के आगे सूत की एक गुत्थी थी। उसको उसने सिगड़ी के पास रख दिया। सलाई जलाकर वह गुत्थी पर रखने ही वाला था कि लहना सिंह ने बिजली की तरह दोनों हाथों से उलटी बंदूक को उठाकर उसकी कुहनी पर तानकर दे मारा ।

(ख) 'सम्पूर्ण क्रांति' एक बृहत और व्यापक आन्दोलन है। यह वर्तमान की सामाजिक और राजनीतिक जड़ता को तोड़ने की क्रांति है। इस क्रांति का लक्ष्य है- दलविहीन वास्तविक लोकतंत्र की स्थापना, आर्थिक समानता और जीवन के क्षेत्र में नैतिकता के प्रति आग्रह का

विकास । यह भारत की जनता की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं नैतिक आकांक्षाओं की पूर्ति की क्रांति है।

(ग) 'कंड़बक' के कवि मलिक मुहम्मद जायसी हैं। कवि के अनुसार कविता कवि के व्यक्तित्व के अनुरूप ही होता है। जायसी के अनुसार कविता को उन्होंने रक्त की लेई लगाकर जोड़ा है। इसमें गाढ़ी प्रीति का नयनजल है। फूल झड़कर नष्ट हो जाता है पर उसकी खुशबू रह जाती है। कवि एक दिन मर जाएगा लेकिन उनकी लिखी कविता अमर रहेगी। यहि कवि जायसी की सोच है।

(घ) जब मानव जाति ने कृषि का आविष्कार किया तो नारी घर में और पुरुष बाहर रहने लगा। यहाँ से जिन्दगी दो टुकड़ों में बँट गयी। घर का जीवन सीमित और बाहर का जीवन निस्सीम होता गया एवं छोटी जिन्दगी बड़ी जिन्दगी के अधिकाधिक अधीन होती चली गई। कृषि के विकास के साथ ही नारी की पराधीनता भी आरम्भ हो गयी।

(घ) 'ओ सदानीरा' गंडक नदी के लिए कहा गया है।

(च) शिवाजी की तुलना भूषण ने इन्द्र, राम, परशुराम, चीता, मृगराज, कृष्ण आदि से की है।

8. (क) कहानी के प्रथम भाग में ही मालती के यन्त्रवत् जीवन की झलक तब मिल जाती है, जब वह अतिथि का स्वागत केवल औपचारिक ढंग से करती है। अतिथि उसके रिश्ते का भाई है जिसके साथ वह बचपन में खूब खेलती थी, पर वर्षो बाद आए भाई का स्वागत उत्साहपूर्वक नहीं करती, बल्कि जीवन की अन्य औपचारिकताओं की तरह एक और औपचारिकता निभा देती है। हम देखते हैं कि मालती अतिथि से कुछ नहीं पूछती बल्कि उसके प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर ही देती है। उसमें अतिथि की कुशलता या उसके वहाँ आने के उद्दश्य या अन्य समाचारों के बारे में जानने की कोई उत्सुकता नहीं दिखती है। यदि पहले कोई उत्सुकता, उत्साह जिज्ञासा या किसी बात के लिए उत्कंठा भी थी तो वह दो वर्षो के वैवाहिक जोवन के बाद नहीं रही। विगत दो वर्षो में उसका व्यक्तित्व बुझ सा गया है, जिसे उसका रिश्ते का भाई भाँप लेता ह। अत: मालती का मौन उसके दम्भ या अवहेलना का सूचक नहीं, बल्कि उसके वैवाहिक जीवन की उत्साहहीनता, नीरसता और यांत्रिकता की ही सूचक है। यह एक विवाहित नारी के अभावों में घुटते हुए पंगु बने

व्यक्तित्व की त्रासदी का चित्रण है। यह एक नारी की सीमित घरेल परिवेश के बीतते उबाऊ जीवन का चित्रण है।

अथवा

'सम्पूर्ण क्रांति' पाठ में 5 जून 1974 को पटना के गाँधी मैदान में दिये गये जयप्रकाश नारायण के 'सम्पूर्ण क्रांति' वाले ऐतिहासिक भाषण का एक अंश संकलित है। संपूण भाषण स्वतंत्र पुस्तिका के रूप में 'जनमुक्ति' पटना से प्रकाशित है। इस संकलित अंश से उसकी एक छोटी-सी झलक भर मिलती है, किन्तु लाखों की संख्या में सम्पूर्ण प्रदेश और देश के विविध क्षेत्रों से आये लोगों, विशेषकर युवा वर्ग के उस ऐतिहासिक जन समूह के बीच लोकनायक ने अस्वस्थ दशा मं भी शांतिपूर्वक बातें कहीं और सम्पूर्ण जनता मंत्रमुग्ध होकर सुनती रही। उनकी बातें सुनकर भाषण के बाद लोगों के हृदय में क्रान्तिकारी विचार धधक उठे और आन्दोलन ने विराट् रूप धारण कर लिया। पटना के गाँधी मैदान में फिर न वैसी भीड़ इकट्ठी हुई और न वैसा कोई प्रेरक भाषण और न जन संवाद कायम हो सका। वास्तव में जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रान्ति का लक्ष्य देश में अराजकता और भ्रष्टाचार के विरूद्ध एक शंखनाद माना जाता है।

8.(ख) विनोद कुमार शुक्ल समकालीन कवि है। उनकी कविताएँ अनुभव की सच्चाई व्यक्त करती है। विनोद कुमार शुक्ल की कविता 'प्यारे नन्हें बेटे को' वार्तालाप शैली में लिखी गयी है। इस कविता में कवि कहते है कि लोहा कर्म का प्रतीक है। इसे हर वस्तु में तलाशना होगा। वह प्यारी बिटिया से पूछता है कि बताओ आस-पास कहाँ-कहाँ लोहा है चिमटा, सिगड़ी, समसी, दरवाजे की साँकल, कब्जे में, बिटिया बताती है। रूक-रूक कर फिर याद कर बताती है, लकड़ी, दो खंभों पर वह एक सैफ्रटी पिन, पूरी साइकिल में लोहा। कवि को लोहा के प्रति इतना आग्रह क्यों है? कवि बताता है कि लोहा कर्म का प्रतीक है। वह जहाँ भी रहता है अपनी मजबूती के साथ रहता है। उसका शोषण कोई नहीं कर सकता। कवि पुत्री को याद दिलाता है कि फावड़ा, कुदाली, खुरपी सभी में लोहा है। कवि को पुत्री भी याद दिलाती है कि बाल्टी, छत्त की डंडी आदि में भी लोहा है। वह समाज के निम्न वर्ग के मजदूर को समाज का लोहा मानता है जिसके बल पर समाज मजबूती से खड़ा है परन्तु

वह मजदूर शोषित है। लोहा कदम-कदम पर और एक गृहस्थी में सर्वव्यापक है। यह लोहा दुर्भेध प्रतीकार्थ देता है। वह ठोस होकर भी जिंदगी में घुला मिला हुआ और प्रवाहित है।

अथवा,

''जन-जन का चेहरा एक'' अपने में एक विशिष्ट एवं व्यापक अर्थ समेटे हुए है। कवि पीड़ित संघर्षशील जनता की एकरूपता तथा समान चिन्तनशीलता का वर्णन कर रहा है। कवि की संवेदना विश्व के तमाम देशों में संघर्षरत जनता के प्रति मुखरित हो गई, जो अपने मानवोचित अधिकारों के लिए कार्यरत है। एशिया, यूरोप, अमेरिका अथवा कोई भी अन्य महादेश या प्रदेश में निवास करने वाला समस्त प्राणियों का शोषण तथा उत्पीड़न के प्रतिकार का स्वरूप एक ऐसा है। उनमें एक अदृश्य एवं अप्रत्यक्ष एकता है।

उनकी भाषा, संस्कृति एवं जीवन-शैली भिन्न हो सकती है, किन्तु सभो के चेहरों में कोई अंतर नहीं दिखता, अर्थात् उनके चेहरे पर हर्ष एवं विषाद, आशा तथा निराशा की प्रतिक्रिया एक जैसा होता है।

कहने का तात्पर्य है कि यह जनता दुनिया के समस्त देशों में संघर्ष कर रही है अथवा इस प्रकार कहा जाए कि विश्व के समस्त देश, प्रान्त तथा नगर सभी स्थान के 'जन-जन' के चेहरे एक समान है। उनकी मुखाकृति में किसी प्रकार की भिन्नता नहीं है। आशय स्पष्ट है, विश्वबंधुत्व एवं उत्पीड़ित जनता जो सतत संघर्षरत है, उसी की पीड़ा का वर्णन कवि कर रहा है।

9. भक्तिकाल की सामान्य प्रवृतियाँ निम्नलिखित है-

(i) राज्याश्रय का त्याग

(ii) नाम की महत्ता

(iii) गुरु की महत्ता

(iv) आध्यात्मिक एवं दार्शनिक

(v) अहंकार का त्याग

अथवा

आधुनिक काल के साहित्य की प्रमुख प्रवृतियाँ निम्नलिखित है-

(i) पद्य एवं गद्य का विकास

(ii) राष्ट्रोय भावना का उत्थान

(iii) भाषा का परिवर्त्तन

(iv) शैली परिवर्त्तन

(v) नवयुग की चेतना का विस्तृत विवेचन।

*****